

असाधारगा -EXTRAORDINARY

भाग III—सण्ड 1 PART III—Section 1

प्राधिकार से प्रकारिक PUBLISHED BY AUTHORITY

सं॰ 3] No. 31 नई विस्ती, शुक्रवार, जनवरी 17, 1986/पोव 27, 1907 NEW DELHI, FRIDAY, JANUARY 17, 1986/PAUSA 27, 1907

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संस्था की जाती है जिससे कि यह मलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate Taging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

कार्यालय, सहायक श्रायकर श्रायक्त (निरोक्षण) श्रज्ञैन रोज

श्रायकर श्रीधनियम, 1961 (1961 का 43)की धारा 269व (1) के श्रीधीन सचनाएँ

कानपुर, 15 जनवरी, 1986

निदंश नं. एस. डी 280/85-86 -- अतः मुझे, एच. आर. वासआयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात्
'उस्त अधिनियम' कहा गया है) के आरा 269च के अधीन सक्षम प्राधिकारों को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृत्य 1,00,000/- कु० से अधिक है और जिसकी सं. 80/4 है तथा जो असारी रोड में स्थित है (और इससे उपाबद अनुमूर्चा में और पूर्ण क्य से बणित है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारों के कार्यालय, मृजफकरनगर में, रिजस्ट्रीकरण अधिनियम. 1908 (1908 का 16) के अधीन रिजस्ट्रीकरण प० 4640, तारीख 10-4-85 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोकत सम्पत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्नह प्रतिशत से अधिक है अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरितः (अन्तरियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से युक्त श्रन्तरण, लिखित में वास्तविक रूप में कथित नहीं किया गया है :—

- (क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबन, आयकर प्रिथिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देते के अन्तरक के वायित्व में कभी करने या उससे बचने में मुविधा के लिए; और/या
- (ख) ऐसे किसी भ्राय या किसी धन या अन्य भ्रास्तियों की जिन्हें भारतीय भ्रायकर श्रिधितियम, 1922 (1922 का 11) या भ्रायकर श्रिधित्यम, 1961 (1961 का 43) या भ्रत-कर अधितियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ भ्रत्तिति द्वारा प्रकट नहीं किया गया थाया किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए ।

श्रवः श्रव उक्त श्रधिनियम की धारा 269ग के श्रनुसरण मे, मैं उक्त श्रिधिनियम की धारा 269ग की उपधारा (1) के श्रधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, श्रयति :--

 श्री वनस्याम दाम, एडवोकेट भैरव का मन्दिर, मुजक्फरनगर ।

(भन्तरक)

(भ्रन्तिरत्तेः)

सुभाष चन्द्र मिलल,
 द्वारा णकर मिश्टान भण्डार,
 श्रंमार: रोड मुभाषकरनगर।

श्री/श्रीमयी/कृताणः उपरोक्त

(बह व्यक्ति, जिसके ग्रिक्षिणोग में सम्पत्ति है)

4 श्रं/श्रं मते/कृमारः उपरोक्त

(वह व्यक्ति, जिसके बारे में अधोहस्ताक्षर: जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह मुखना आर्र' करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के श्रर्जन के लिए कःमंबाहियां शुक्त करता हूं। उक्त संश्वति के श्रर्जन के सम्बन्ध में कोई मं, श्राक्षेप ⊶-

- (क) इस सूखना के राजपक्ष में प्रकाशन की तारीख में 45 दिन की अवधि, या तत्यस्थान्धीः व्यक्तियां पर सूचना की नामील 30 दिन की श्रविध, जो भी श्रविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में ने किसी व्यक्ति की द्वारा ।
- (ख) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीख़ से 45 दिन के मानर उकत स्थावर सम्पन्ति में हिनबढ़ किसी श्रन्थ व्यक्ति हारा श्रमोहरूनाक्षरा के पारा सिखित में किए जा मकेंगे।

स्पष्टोकरण:--इसमें प्रपृक्त शब्दों भीर पदों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में परिभाषित हैं, बहां अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

ग्रनसूर्चः

हुकान नं. 80/4, स्थित असारा रोड, मुजफ्फरनगर।

मार्रा**खा**: 15-1-86

मोहरः

(जो लागृन हो उसे काट दे जिए)

OFFICE OF THE COMPETENT AUTHORITY INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX (ACQUISITION RANGE)

Notices Under Section 269D (1) of the Income-Tax Act, 1961 (43 of 1961)

Kanpur, the 15th January, 1986

M.D.280|85-86:—Whereas, I, H. R. Das, being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,000,000 and bearing No. 80|4 situated at Ansari Road, Muzaffar Nagar (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Muzaffar Nagar under registration No. 4640 dated 10-4-1985 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more then fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer

as agreed to between the transferor (s) and transferee (s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income axising from the transfer; and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) of the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Shri Ghanshyam Dass, Advocate, R|o. Bhairon Ka Mandir, Muzaffar Nagar.

(Transferor)

 Shri Subhash Chand Mittal, Clo. Shanker Misthan Bhandar, Ansari Road, Muzaffar Nagar.

(Transferee)

3. Shri|Smt. -Do-

[Person(s) in occupation of the property].

4. Shri|Smt. -Do-

(Persons whom the undersigned knows to be interested in the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publicacation of this notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later.
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Shop No. 80|4, Situted at Ansari Road, Muzaffar Nagar. Date: 15-1-1986.

SEAL

*Strike off where not applicable.

निदेश नं. एम. ही. 28:/85-86-- ग्रतः मुझे, एच. शार. वास, शायकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके परवास् 'उक्त प्रधिनियम' कहा प्रया है) की धारा 269ख के प्रधीन सक्षम प्रधिकारों को यह विश्वास करने था कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उक्ति वाजार मून्य 1.00,000/- इ० से श्रधिक है और जिसकी सं. 80/2 है तथा जो असारी रोड़ में स्थित है (शीर इयमें उपाबड प्रमुखी में भीर पूर्ण क्य से विजित्त है), रिविट्सकारी शिक्तरों के कार्यालय, मुजफ्करनगर में, रिजिट्सेकरण पिधिनियम, 1908 (1908 का 16) के प्रधीन रिजस्टीकरण सं 4849, तारीख 12-4-85 थी पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचिन वाजार मूल्य से कम वृश्यसान प्रतिकल के लिए श्रवारित की गई है भीर मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथा, बॉक्त गम्बति का उचिन बाजार मूल्य, उसके वृश्यान प्रतिकल के लिए श्रवारित की गई है भीर मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथा, बॉक्त गम्बति का उचिन बाजार मूल्य, उसके वृश्यान प्रतिकत से, ऐसे रुप्यतान यिक्त के पत्वह प्रतिशत से भित्र के श्रवान रिकान के स्थान से भित्र के लिए स्थान गया प्रतिकत, निम्मिलिक उद्देश्यों से युक्त अन्तरण, लिखित में थानविक कप से कथित नहीं किया गया है :---

- (क) ग्रन्तरण से तुई पिहें ग्राय की बाबत, श्रायकर श्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) के श्रधान कर देने के श्रस्तरक के दायित्व में कमें। करने या उससे बचने में मृविधा के लिए; भ्रीर/या
- (ख) ऐसे तिला श्राय या फिसो धन या श्रन्य शास्त्रियों की जिन्हें आपनोय क्रायकर श्रिधिनियम, 1922 (1922 का 11) या शायकर श्रिधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धनकर श्रिधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ श्रन्तितिं द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में गुविधा के लिए।

श्रतः श्रव उक्त श्रिष्ठितियम की धारा 269ग के श्रनुसरण में, मैं उक्त श्रीधित्तियम की धारा 269घ की उपधारा (1) के श्रधीन, निम्नितिखित व्यक्तियों, श्रयीत् :--

श्री धर्नश्याम दास, एडवोकेट, (अन्तरक)
 S/o गिर्ण्याल सरबट.
 संजक्फरनगर ।

 श्री सुभाष चन्द मितलं, (श्रनिरिती)
 C/o संकर मिण्डान भण्डार, श्रीसारी रोड, मुजक्करनगर।

3. श्रं /श्रं मते ं /कृमारः (बह व्यक्ति, जिसके उपरोक्त श्रधिभोग में सम्पत्ति है)

4. श्री/श्रीमती/कुमारी (बहुब्यक्ति,जिसके बारे में उपरोक्त श्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि बहु सम्पत्ति में हितबब है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के प्रजीन के लिए कार्यवाहिया सुरू करनाहे। उक्त सम्पत्ति के प्रजीन के सम्बन्ध में कोई भी ग्राक्षेप:--

- (क) इस सूचना के राजपक्ष में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की श्रविध, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील 30 की श्रविध, जो भी श्रविध बाद में समाप्त होती हो, के मीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (खा) इस स्वान के राजपक्ष में प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिनबद्ध किसी श्रन्थ व्यक्ति द्वारा श्रधोहरूनाक्षरों के पास लिखिन में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण :-- इसमें प्रयुक्त शब्दों श्रीर पदों का, जो श्रायकर श्रिधिनियम, 1961 (1961 का 43) के श्रध्याय 20क में परिमापित हैं, वहीं श्रर्थ होगा जो उस श्रध्याय में दिया गया गया है। भन् सुर्घ.

दुकान नं . ४०/ ३, स्थित श्रंसारं। रोड मुजफ्फरनगर ।

तारा**ष**: 15/1/86

मोहर:

(को लागून हो उसे काट वे जिल्)

M.D. 282|85-86.—Whereas I, H. R. Dass, being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000 and bearing No. 802 situated at Ansari Road, Muzaffar Nagar (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Muzaffar Nagar under registration No. 4849 dated 12-4-85 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferee(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:—

 Shri Ghanshyam Dass, Slo, Giri Lai Saravat, Rlo Bharav Ka Mandir Muzaffar Nagar

(Transferor)

 Shri Subhash Chand Mittal, Clo Shankar Misthan Bhandar, Ansari Road, Muzaffar Nagar.

(Transferee)

3. Shri|Smt. -Do-

[Person(s) in occupation of the property].

4. Shri|Smt. -Do-

(Persons whom the undersigned knows to be interested in the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later).
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Shop No. 80|2, Situated at Ansari Road, Muzaffar Nagar.

Date: 15-1-1986.

SEAL

*Strike off where not applicable.

निवेश नं. एम. डी.-283/85-86-- घतः मुझे, एच. घार. दास, श्रायकर श्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269व के अधुन सक्षम प्राधिकारी की यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सस्पत्ति, जिसका उच्चित बाजार मुख्य, 1,00,000/- रु० से अधिक है भीर जिसकी सं. 80/3 है तथा जो श्रंसारः रोड में स्थित है (श्रीर इससे उपायद श्रनुसूची में भीर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्द्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय मृजफ्फरनगर में, रजिस्ट्रीकरण श्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के श्रधीन रजिस्टीकरण संव 4847, तारीख 29-4-85 की पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार 45 वण्यमान प्रतिफल अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथा-पर्वोक्त सम्पत्ति का अधित बाजार मृल्य, उसके दश्यमान प्रतिकल से. ऐसे इध्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है अन्तरक (अन्तरकों) ग्रीर अन्तरितः (अन्तरियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से युक्त ग्रन्तरण, लिखिन में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है:---

- (क) श्रन्तरण में हुई किसी शाय की बाबल, श्रायकर श्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) के श्रधीन कर देने के श्रन्तरक के दायिक्व में कभी करने या उससे बचने में मूबिधा के लिए; श्रीर/या
- (ख) ऐसे किसी भाय या किसी धन या भ्रत्य श्रास्तियों की जिन्हे भारतीय आयकर श्रिवित्यम, 1922 (1922 का 11) या श्रायकर श्रिवित्यम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर श्रिवित्यम, 1957 (1957 का 27) के भ्रयोजनार्थ श्रत्वित्यों हारा प्रकट नहीं किया गया या या किया जाना व्याहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए।

भतः श्रम उक्त भिवित्यम की धारा 269ग के श्रनुसरण में, मैं उक्त श्रीधिनियम की धारा 269घ की उपधारा (1) के श्रधीन, निश्निलिखित व्यक्तियों, श्रथील्:--

 श्री षनश्याम दास, एउवोकेट, भैरो का मन्दिर, मुजफ्फरनगर ।

(ग्रन्तरक)

- श्रीमती लता मिल्नल, पत्नी श्री सुराए चर रिनर द्वारा शंकर मिल्ठान भण्डार, श्रमारी रोड,—मजफ्फरनगर। (श्रन्तरिती)
- 3. श्री/श्रीमती/कुमारी उपरोक्त- (वह व्यक्ति, जिसके प्रथिभोग में सम्पत्ति है)
- 4. श्रो/श्रोमता/कुनारी उपरोक्त- (वह व्यक्ति, जिसके आरे में प्रश्लोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सस्पत्ति में हितवह है)

को यह सूचन, अरी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्थन के लिए कार्यवाहियाँ शुरू करना हूं। उक्त सम्पत्ति के अर्धन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप :---

- (क) इस सूबना के राजपन्न में प्रकाशन की सारीख से 4.5 दिन की प्रविधि, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूपना की तामील 30 दिन की प्रविधि, जो भी प्रविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीकत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा ।
- (ख) इस सूनना के राजपत्र में प्रकाशन की नारीख़ के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिनवड़ किसी अन्य व्यक्ति इत्तरा अधीहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेगे ।

स्पष्टीकरण :--४ तमे प्रयुक्त शब्दों श्रीर पदों का, जो श्रायकर श्रिधिनियम, 1961 (1961 का 43) के श्रध्याय 20क में परिक्रिपित हैं, वहीं शर्थ होगा जो उस शब्दाय में दिया गया है।

प्रनुपूर्ण

वुकान न . ४०/३, स्थित श्रंमारी रोड, मुजफ्फरनगर ़

ना**रीख**ः 15-1-86

मोहर:

(जो लागून हो उसे काट दीजिए)

MD-283|85-86.—Whereas, I, H. R. Das, being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000 - and bearing No. 80 3 situated at Ansari Road, Muzaffar Nagar (and more fully described in the schedule below) has been transfered and registered under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Resistering Officer at Muzaffar Nagar under Registration No. 4847 29-4-1985 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferee(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act, in respect of any income arising from the transfer; and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian

Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

- 1. Shri Ghanshyam Dass Advocate Rjo Bhairav Ka Mandir, Muzaffar Nagar—(Transferor)
- Smt. Lata Mittal Wo Subhash Chand Mittal Co Shankar Misthan Bhandar, Ansari Road, Muzaffar Nagar.—(Transferee)
- 3. Shri|Smt, Do- [Persons in occupation of the property].

4. Shri|Smt Do- (Persons whom the undersigned knows to be interested in the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Shop No. 80|3, Situated at Ansari Road, Muzaffar Nagar.

Date: 15-1-1986.

SEAL

*Strike off where not applicable.

निदेश नं. एम. डी. 284/85-86.—अतः मृझे एच. आर. दास. आयकर अधिनियम. 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चान् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) को धारा 269व के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वाम करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचिन वाजार मृन्य 1.00,000क. से अधिक है और जिसकी मं. 80/1 है तथा जो अंगारी रोड में स्थित है (और इसमें उपाबद अनुसूजी में और पूर्ण रूप से अणित है), रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय मुजपकरनगर में, रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन रिजस्ट्रीकरण सं 5492 तारीख 29-4-85 को पूर्वीकन मन्यिक छिनम बाजार मृन्य से कम के

दृष्यमान प्रतिफल के लिए प्रन्तरित की गई है भीर मुझे यह विश्यास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृत्य, उमके दृष्यमान प्रतिफल के पन्नह प्रतिणत से अधिक है अन्तरक (अन्तरकों) और प्रन्तरितीं (अन्तरियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए नय पाया प्रया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से युक्त धन्नरण, लिखिन में यास्तिक रूप से कथिन नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किमी भ्राय की बाबत, भ्रायकर फ्रांधनियम, 1961 (1961 का 43) के भ्रायीन कर देने के अन्तरक के वायित्व में कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए भ्रार/मा;
- (ख) ऐसे किसी आब या किसी धन या घन्य घास्तियों की जिन्हें भारत य आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या प्रायकर धिधित्यम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधित्यम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरियों द्वारा प्रकट नेहीं किया गया था किया जाना चाहिए था, छिपनि में सुविधा के लिए।

म्रतः स्रम उक्त स्रिधिनियम की धारा 269ग के स्रनुमरण में, मैं उक्त स्रिधिनियम की धारा 269घ का उप ध्रान्य (!) के स्रधीन, निरनिविद्यत स्रायनियों स्रथीन् :---

श्री भाग्याम दास एडवोकेट (अस्तरक)
 सि, भैरव का मन्दिर,
 सजस्करनगर

श्री बिशन लाल भित्तल पुत्र श्री बृद्ध् मल (भ्रन्तरिर्ता)
 रैवास पुरी
 मुजपफरनगर

3 श्रां/श्रीमतो/कुमारी उपरोक्त (बह व्यक्ति, जिसके श्रक्षिमोग में सस्पत्ति है)

4. श्री/श्रीमती/कुमारी उपरोक्त (बह व्यक्ति जिसके बारे में अश्रीहस्ताक्षरी जानता है कि बहें सम्पत्ति में हिनबढ़ है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के प्रजन के लिए कार्यवाहिया शरू करना हूं। उकन सम्पत्ति के प्रजैन के सम्बन्ध में कोई भी प्राक्षेप :---

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाणन की सारीख से 45 दिन की प्रविध, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की नामील 30 दिन की भविध, जो भी भविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीवन व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा ।
- (खा) इस मूचना के राजपन्न में प्रकाशन की भारीखाके 45 दिन के भीतर उकत स्थावर सम्पन्ति में हिन्दात किसी धन्य व्यक्ति द्वारा ग्रधोतस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पर्प्टाकरण :--इसमें प्रयुक्त जब्दों और पदों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में परिभाषित है. बही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

यनुमुधा

दृकान न. 80/1 स्थित श्रेसारी रोड म्जफ्फरनगर ।

त।रीख: 15-1-86

मोहर:

िजो लागुन हो उसे काट दीजिए।

M.D.284|85-86.-Whereas, I H. R. Das being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000}- and bearing No. 80|1 situated at Ansari Road, M. Nagar (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registered under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Muzaffar Nagar under Registration No. 5492 date 29-4-85 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor(s) and transferec(s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said. Act, in respect of any income arising from the transfer and/or;
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

- Shri Ghanshyam Das Advocate R|o Bhairav ka Mandir, Muzaffar Nagar. —(Transferor)
- 2. Shri Bishan Lai Mittal Slo Shri Budhoomal Rlo Raidas Puri, Muzaffar Nagar.

(Transferee)

- 3. Shri|Smt. Do- [Person(s) in occupation of the property]
- 4. Shri|Smt.

 Dowhom the undersigned knows to be interested in the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Shop No. 80|1, Situated at, Ansari Road, Muzaffar Nagar.

Date: 15-1-1986.

SEAL

* Strike off where not applicable.

कानपुर, 14 जनवरी, 1986

निदेण नं. एम. डो.-285/85-86---अतः मझे एच. प्रार. दास, अ।यकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इनके पश्चात् 'उक्त प्रिधिनियम' कहा गया है) की धारा 269 ख के प्रधीन सुक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सनात्ति, जिसका उचित बाजार मृत्य 1,00,000 क. से प्रधिक है घौर जिसकी सं. 80/1 से 80/4 है तथा जो सरबट गेंट मु. नजर में स्थित है (भीर इससे उपाबस अनुसूची में और पूर्ण रूप से बर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकार्रः के कार्यालय म् अप्रकरनगर में, रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के भ्रजीन रजिस्ट्र करण सं० 5492, 4849, 4640 और ४८47, सारीख क्रश्रील, 1985 को पूर्वोतर सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दुश्यमान प्रतिफल के लिए भन्तरित की गई है और मझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापुर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मन्य, उसके दृश्यमान प्रतिकल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिकल के पन्त्रह प्रतिशत से प्रधिक है प्रस्तरक (भन्तरकों) भीर अन्तरिती (भ्रन्तरियों) के बीच ऐसे प्रन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिकत, निम्नलिखित उद्देश्यों से युक्त प्रस्तरण, लिखित में बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) भन्तरण से हुई किसी ग्र.य की बाबत, श्रायकर मधिनियम, 1961 (1961 का 43) के श्रधीन करदेने के भन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए श्रीर/मा
- (ख) ऐसे किसी श्राय या किसी धन या अन्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में मुखिधा के लिए।

प्रतः प्रव उक्त प्रश्नितियम की धारा 269ग के प्रनुसरण में, मै उक्त प्रश्नित्यम की धारा 269प की उप धारा (1) के प्रधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों प्रर्थात् :---

- श्री घनण्याम दास S/o गिरी लाल (भ्रन्तरक)
 मी. भैरी का मंदिर
 मुजक्फरनगर।
- श्रो मुभाष बन्द्र मित्तन, लगा मित्तल (भ्रन्तरिती) बिगन लाल मित्तल-C/o शंकर मिष्ठान भण्डार, भ्रंमारी रोड, मृजप्फरनगर।
- अो/श्रीमती/कुमारी क्रैतागण (वह व्यक्ति, जिसके प्रधिभोग में सम्पत्ति है)
- 4. श्री/श्रीमती/कुमारी केतागण (अह व्यक्ति, जिसके बारे में श्रद्धोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितवद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के प्रार्जन के लिए कार्यवाहिया गुरू करता हुं। उक्त सम्पत्ति के प्रार्जन के सम्बन्ध में कोई भी धाक्षेप:---

- (क) इस सूचना के राज्यक में प्रकाशन की नारीख में 45 दिन की प्रविधि या नत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की मामील 30 दिन की अविधि, जो भी प्रविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीभर पूर्वोक्त व्यक्तियों में में किसी व्यक्ति के ब्रासा!
- (ख) इस सूचना के राजपन मे प्रकाशन की नारीख के 15 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिनवाड़ किसी प्रन्य व्यक्ति हारा प्रधी-हरूत करी के पास निश्चित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण: -- इसमें प्रयुक्त शब्दां और पदों का, जो अध्यकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में परिचापित है, यही अर्थ होता जो उस अध्याय में दिया गया है।

भनुसूची

सम्पत्ति संख्या 80/1 स 80/4

मरबट गेट,

म् जपकरनगर ।

तारीख: 14-1-86

एच. भार. दास, सक्षम प्राधिकारी.

मोहर: (सहायक ग्रायकर ग्रायुक्त, निरीक्षण),

(ग्रर्जन रेंजा), कानपूर

[जो लागुन हो उसे काट दीजिए]

M.D. 285 85-86.—Whereas, I, H. R. Das being the Competent Authority authorised by the Central Government in this behalf under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), hereinafter referred to as the said Act, have reason to believe that immovable property having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000|- and bearing No. 80|1 to 80|4 situated at Sarbat Gate (and more fully described in the schedule below) has been transferred and registerd under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Muzaffar Nagar under Registration No. 5492, 4849, 4640 & 4847 date April 85 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the transferor (s) and transferce (s) has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said. Act, in respect of any income arising from the transfer and or:
- (b) facilitating the concealment of any income or any money or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferce for the purposes of the

Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act, or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957).

Now, therefore, in pursuance of Section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of Section 269D of the said Act, to the following persons, namely:

- 1. Shri Ghanshyam Dass Soo Giri Lal Roo Bhairav Ka Mandir, Muzaffar Nagar--(Transferor)
- 2. Shri Subhash Chand Mittal, Lata Mittal & Bishan Lal clo Shankar Misthan Bhandar, Ausari Road, Muzaffar Nagar.

(Transferee)

3. Shri|Smt,

Do- [Person(s) in occupation of the property].

4. Shri|Smt.

Do- (Persons whom the undersigned knows to be interested in the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned.

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publicacation of this notice in the official Gazette or a period of 30 days from the service of the notice on the respective persons whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XNA of the said Act shall have the same meaning agiven in that Chapter.

SCHEDULE

Property No. 80]1 to 80|4

Sarbat Gate, Muzaffarnagar

H. R. DASS, Competent Authority

Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, (Acquisition Range), Kanpur

Date: 14-1-1986

SEAL

* Strike off where not applicable.

		7